बन्धन नहीं पूर्ण सम्बन्ध को इंगित करता है- रक्षाबंधन

कभी आप किसी कैदी को मिले हैं जाकर? अगर आप कभी जाकर मिलेंगे तो पायेंगे, जैसे लग रहा है कि इसने कोई गुनाह किया ही नहीं है। सबसे शालीन, आराम से खड़ा होकर आपसे बात करता नज़र आएगा। कारण? क्योंकि वो कैद में है। फ्री नहीं है। इसका मतलब ये हुआ कि जैसे ही हम किसी बंधन में होते हैं तो उस समय हमसे गलतियां बहुत कम होती हैं। लेकिन जैसे ही हम स्वतंत्र होते हैं तो हम गलतियों पर गलतियां करते हैं, और फिर फँसते चले जाते हैं। जैसे ही फिर कैद में आते हैं हमको सबकुछ एहसास होता है कि हमने गलती की।

वैसे ही परमात्मा भी हम सभी को बंधन से सम्बन्ध में लाना चाहते हैं। और सम्बन्ध में लाने का मात्र एक आधार है- वो है बंधन में बंधना। आप देखो, जब आप परमात्म बंधन में बंधते हैं- जहाँ पर मर्यादायें हैं, धारणायें हैं, तो आप हरेक बात से बच जाएंगे। सबने ये बंधन को, रक्षाबंधन को एक पारम्परिक रूप से मनाना शुरू किया। और मनाते हुए हमेशा ये सोचा कि ये चीज़ तो भाई-बहन का त्योहार है। नहीं, ये एक बंधन है जो गहरे सम्बन्ध की ओर हमको ले जाता है। सम्बन्ध वो जो हमको हमेशा, हर पल, हर क्षण, रक्षा की तरफ ले जाता है। हमारी रक्षा करता भी है और कराता भी है। आपको बता दूं, जब हम सभी अपने जीवन को पूरे एक फ्लैशबैक में ले जाकर देखें तो पायेंगे कि जब भी हम माता-पिता के घर में थे, जब हमारे ऊपर कड़े पहरे थे, जब हमारे ऊपर पूरी मर्यादायें थीं तो उस समय हमसे गलतियां बहुत कम होती थीं। भले उस समय हम कोसते रहते थे कि हमको फ्रीडम नहीं मिलती। लेकिन जैसे ही माता-पिता से दूर हुए तो बहुत सारी ऐसी गलतियां हुईं जो हमने कभी सोचा भी नहीं था। तो वैसे ही ये जो बाहरी दुनिया है जिसमें हर पल, हर क्षण, हम सभी कुछ न कुछ ऐसा गलत कर रहे हैं, चाहे देख रहे हैं, चाहे सुन रहे हैं, चाहे पढ़ रहे हैं, क्यों देख, सुन, पढ़ रहे हैं क्योंकि उस समय हम स्वतंत्र हैं इसलिए सारा देख, सुन रहे हैं। लेकिन अगर यही चीज़ परमात्मा के साथ जुड़ जाए, परमात्मा के डायरेक्शन, माना माता-पिता, पिता हमारा परमात्मा है और उसका जो निर्देश है, उसका जो आदेश है कि नहीं ये सारी चीज़ें तुम्हारे लिए घातक हैं, अच्छी नहीं हैं, इससे तुम नीचे गिरोगे, हमेशा नीचे बहते जाओगे तो हम शायद उसको ना देखें।

लेकिन वो निराकार परमात्मा हम सभी को इस बात को बताने के लिए बहुत सारे उदाहरण सामने रखता है, जिसमें बहुत सारे बंधनों में से उन्होंने एक ये बंधन का उदाहरण दे दिया, वो है रक्षासूत्र या रक्षाबंधन। जिसको उन्होंने पवित्रता के साथ जोड़ा, भाई-बहन के साथ जोड़ा। ये आपको भी पता है कि भाई-बहन का रिश्ता पवित्र माना जाता है। जो बहुत सारी चीज़ें पवित्रता के साथ जुड़ी हैं तो वैसे ही व्यक्ति की रक्षा हो जाती है। अब देखो, ऋषि-मुनियों को भी जब पवित्र दिखाते हैं तो दिखाते हैं कि बहुत सारी ज़हरीली चीज़ें भी उनके ऊपर अटैक नहीं करतीं। चाहे वो सर्प हो, या फिर कोई ऐसे जंगली जानवर हैं, वो भी नहीं आते। कारण? पवित्रता का बल। तो इसका मतलब है, ये बंधन हमको एक बहुत सुन्दर एक तरह से कैद दे रहा है, एक तरह से हमारी रक्षा के लिए श्रीमत को कैद दे रहा है। जिससे मैं सलामत रहूँगा। जिससे मैं हमेशा खुश रहूँगा। कारण सिर्फ एक है कि ये बात हमें समझ में आ जाए। महज़ ये बात हमको समझ में आ जाए।

पवित्रता के इस पावन पर्व का इतिहास और उसको समझाने वाले भाव दोनों बदल गए। इस बदले भाव से हम सिर्फ इसको एक त्योहार का नाम देते हैं। लेकिन कभी उसके अर्थ और भावार्थ के अनुरूप अपने को नहीं ढालते। तो इस बार क्या हम इसको दूसरी तरह से समझना चाहेंगे?

तो आपको ये जो पर्व है इस पर्व का सम्पूर्ण अर्थ समझ में आ जाएगा कि ये पर्व हमें उस बन्धन में बांधता है जो हमारे लिए हमेशा उपस्थित है। जैसे आपने लौकिक माता-पिता का नहीं सुना तो हम परेशान हुए। लेकिन अगर पारलौकिक माता-पिता का नहीं सुनेंगे तो पूरे जीवनभर परेशान होंगे, कई जन्मों तक परेशान होंगे। इसीलिए इस सूत्र को बांधने के बाद हम सभी हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाएंगे। और ये सुरक्षा कवच एक दिन के लिए नहीं, कई जन्मों के लिए है, जो आज है वो हमेशा कायम रहेगा। तो इस रक्षाबंधन पर इस बंधन में ज़रूर बंधें लेकिन अर्थ सहित।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है। तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।

स्याम-गुआंगजौ। दक्षिण चीन में भारतीय प्रवासियों के बच्चों और युवा साधकों के लिए भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा शुरू की 'कैच इंडिया यंग' कार्य के तहत आयोजित प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल में ब्र.कु. सपना को मुख्य निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया गया। रामायण के महान महाकाव्य पर आधारित एक कहानी सुनाने की प्रतियोगिता में प्रतिभागी बच्चों के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. सपना तथा अन्य।

भीलवाड़ा-राज.। पटेल नगर स्थित पूर्व सैनिकों के पॉलीक्लिनिक में देश के सेवानिवृत्त सैनिकों के लिए आयोजित 'मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव मुक्ति' सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. इंदिरा, ब्र.कु. रचना, ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. डॉ. मीनाक्षी, पॉलीक्लिनिक के प्रभारी लेफ्टिनेंट कर्नल रघु पाल सिंह, डॉ. राधेश्याम ओझा, डॉ. मनीष शर्मा, डॉ. मोहित शर्मा तथा अन्य।

आस्का-ओडिशा। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् शपथ लेते हुए ब्र.कु. प्रभाती, ब्र.कु. सत्यप्रिय, प्रकृति प्रेमी दुर्गा प्रसाद पंडा एवं ओडिशा सरकार द्वारा पुरस्कृत प्रकृति मित्र बाई रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड ग्रुप पूर्व सांसद श्रीमती प्रमिला बिसोई।

उदयपुर-मोती मगरी(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र व मोती मगरी स्कीम सोसाइटी के मेंबर्स द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में महिला आद्य शंकराचार्य सरस्वती, जैन मुनि अरविंद, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

आगरा-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जिला प्रशासन एवं क्रीड़ा भारती के संयुक्त तत्वावधान में 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' थीम पर आयोजित कार्यक्रम के तहत जागरूकता रैली निकालते हुए ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. सोनिया, ब्र.कु. विभोर तथा अन्य।

भरतपुर-डीग(राज.)। आईपीएस पुलिस अधीक्षक राजेश मीणा को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवीणा।

जालंधर-पंजाब। बच्चों के लिए आयोजित एन्जॉयस समर कैंप में बच्चों को सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

गुमला-झारखंड। पर्यावरण दिवस के अवसर पर समाहरणालय परिसर में 'एक पेड़ माँ के नाम' थीम पर आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शान्ति, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. शिव, ब्र.कु. अमित, उप विकास आयुक्त दिलेश्वर महतो, गुमला, अपर समाहर्ता शशीन्द्र बड़ाईक, आईटीडीए निदेशक रीना हांसदा, डीएफओ अहलावत नीरज कुमार, जिला उद्यान पदाधिकारी तरुण प्रवीण, एसडीओ राजीव कुमार रंजन, जिला परिवहन पदाधिकारी पंकज कुमार मेहर, जिला शिक्षा अधीक्षक नूर आलम खान एवं ग्राम पथ ट्रस्ट उप मंजिल पवन साहू।